भारत सरकार

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 2677#

उत्तर देने की तारीख : 16.03.2026

विरासत और शास्त्रीय भाषाओं का संरक्षण

2677#. श्री अमर पाल मौर्यः

श्री अशोकराव शंकरराव चव्हाणः

क्या **अल्पसंख्यक कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) शास्त्रीय भाषाओं और प्राचीन पांडुलिपियों के संरक्षण के लिए समर्पित उत्कृष्टता केंद्रों (सीओई) की स्थापना हेतु विश्वविद्यालयों के चयन के लिए कौन-कौन से मानदंड अपनाए जाते हैं;

(ख) ये उत्कृष्टता केंद्र अल्पसंख्यक युवाओं को संग्रह, अनुवाद और डिजिटल अभिलेखन जैसे क्षेत्रों में कौशल विकास में किस प्रकार योगदान देते हैं;

(ग) प्रधानमंत्री जन विकास कार्यक्रम (पीएमजेवीके) के अंतर्गत स्वीकृति प्रदान की गई उन अवसंरचना परियोजनाओं का ब्यौरा क्या है जो विशेष रूप से अल्पसंख्यक सांस्कृतिक धरोहर स्थलों के संरक्षण पर केंद्रित हैं; और

(घ) भाषाई संरक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव पर शोध करने के लिए केंद्र सरकार और प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों के बीच सहयोग का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

अल्पसंख्यक कार्य मंत्री

(श्री किरेन रीजीजू)

(क) और (ख): प्रधानमंत्री जन विकास कार्यक्रम (PMJVK) के अंतर्गत, अल्पसंख्यक समुदायों के लिए शैक्षिक और अनुसंधान सुविधाओं को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से समुदाय-उन्मुख बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए केंद्रीय सरकारी संगठनों (CGOs) और विश्वविद्यालयों को शामिल करने हेतु अल्पसंख्यक बहुल क्षेत्रों के दायरे से आगे बढ़ाकर योजना का विस्तार किया गया है।

इस विस्तारित दायरे के अंतर्गत, 14 केंद्रीय सरकारी संगठनों और 6 विश्वविद्यालयों को सहायता प्रदान की गई है। बुनियादी ढांचा सुविधाओं के निर्माण के लिए कुल 1246.45 करोड़ रुपए की राशि स्वीकृत की गई है, जिनमें से 707.28 करोड़ रुपए जारी किए जा चुके हैं।

इस पहल के हिस्से के रूप में, अल्पसंख्यक भाषाओं के लिए निम्नलिखित चार उत्कृष्टता केंद्र अनुमोदित किए गए हैं:

- मुंबई विश्वविद्यालय
- दिल्ली विश्वविद्यालय
- गुजरात विश्वविद्यालय
- देवी अहिल्या विश्वविद्यालय

इन केंद्रों को कुल 142.11 करोड़ रुपए की राशि का अनुमोदन दिया गया है। ये केंद्र पांडुलिपि संरक्षण इकाइयां, पुस्तकालय, अभिलेखीय सुविधाएं, अनुसंधान ब्लॉक, विशिष्ट प्रयोगशालाएं और डिजिटल बुनियादी ढांचा जैसी सुविधाएं प्रदान करते हैं। ये केन्द्र अल्पसंख्यक और शास्त्रीय भाषाओं से संबंधित अनुसंधान और शैक्षणिक गतिविधियों को सहायता प्रदान करते हैं, पांडुलिपियों के प्रलेखन और डिजिटलीकरण की सुविधा प्रदान करते हैं, और क्यूरेशन, अनुवाद तथा डिजिटल अभिलेखागार जैसे क्षेत्रों में भी क्षमता निर्माण और कौशल विकास में योगदान देते हैं।

(ग): PMJVK के अंतर्गत मंत्रालय में विशेष रूप से अल्पसंख्यक सांस्कृतिक विरासत स्थलों के संरक्षण से संबंधित कोई भी परियोजना प्रस्ताव विचार के लिए प्राप्त नहीं हुआ है।

(घ): PMJVK के अंतर्गत विश्वविद्यालयों में स्थापित उत्कृष्टता केंद्र भाषाई संरक्षण, पांडुलिपि के प्रलेखन और डिजिटलीकरण से संबंधित शैक्षणिक सहयोग और अनुसंधान गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं। तथापि, भाषाई संरक्षण कार्यक्रमों पर प्रभाव अध्ययन करने के लिए वर्तमान में मंत्रालय द्वारा कोई अलग विशिष्ट कार्यक्रम नहीं किया जा रहा है।

*****